CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

राजस्थान के ऐतिहासिक भाषा काव्य

डॉ. अल्पना शर्मा
सहायक आचार्य
आई.ए.एस.ई. डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी,
सरदारषहर,चूरू, (राज.)
Email-alpna180@gmail.com, Mob.-9460565567

First draft received: 07.01.2026, Reviewed: 19.01.2026
Final proof received: 21.01.2026, Accepted: 25.01.2026

सरांश

राजस्थान का सांस्कृतिक वैभव विश्व इतिहास में अप्रतिम है। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता के वरदान से ओतप्रोत है। राजपूत वीरों ने अपनी संस्कृति की रक्षण के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया, वहीं असंख्य ललनाओं ने जौहर की अग्नि में जीवन की आहुति दी। कर्नल टॉड़ के शब्दों में ''राजस्थान में कोई छोटा सा भी ऐसा राज्य नजर नहीं आता जिसमें थर्मोपोली जैसी रणभूमि ना हो। राजस्थानी भाषा और साहित्य के इतिहास लिखने के जो प्रयास अद्यावधि किए गए हैं वह केवल मारवाड़ या मेवाड़ तक सीमित नहीं है। यहाँ के चारण साहित्य को राजस्थानी नाम से अभिहित किया गया है।'' यहाँ के राव तथा चारण कवियों ने विशेष शैली के ऐतिहासिक प्रबंध काव्यों का प्रणयन कर रासो काव्य परंपरा का सूत्रपात किया, जिनमें पृथ्वीराज रासो, खुमाण रासो, राणा रासो, रतन रासो कायम खाँ रासो आदि प्रमुख है। राजस्थान में ऐतिहासिक काव्य इधर–उधर बिखरे पड़े हैं। कुछ काव्यों का अनुसंधानपरक विश्लेषण करना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

कुँजी शब्द– राजस्थान,ए`तिहासिक, भाषा काव्य

प्रस्तावना

राजस्थान का सांस्कृतिक वैभव विश्व इतिहास में अप्रतिम है। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता के वरदान से ओतप्रोत है। आज का रुखा–सूखा राजस्थान किसी समय में सरस्वती की कल–कल वह छल–छल से रहित, हरित व सघन व वृक्षों से आच्छादित था। राजपूत वीरों ने अपनी संस्कृति की रक्षण के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया, वहीं असंख्य लालनाओं ने जौहर की अग्नि में जीवन की आहुति दी। कर्नल टॉड़ के शब्दों में ''राजस्थान में कोई छोटा सा भी ऐसा राज्य नजर नहीं आता जिसमें थर्मोपोली जैसी रणभूमि ना हो। राजस्थानी भाषा और साहित्य के इतिहास लिखने के जो प्रयास अध्यावधि किए गए हैं वह केवल मारवाड़ या मेवाड़ तक सीमित नहीं है। यहाँ के चँरण साहित्य को राजस्थानी नाम से अभिहित किया गया है।'' राजस्थान में ऐतिहासिक काव्यों का अनुसंधानपरक विश्लेषण करना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

राजस्थान का भाषा काव्य मूलतः है दो भाषाओं में उपलब्ध है– हिंदी तथा राजस्थानी। यहाँ का मध्ययुगीन साहित्य प्रायः ब्रज भाषा अर्थात पिंगल और राजस्थान की विशिष्ट काव्यात्मक शैली डिंगल में उपलब्ध होता है। नाथ व संत कवियों की सधुक्कड़ी व राजस्थानी मिश्रित हिंदी की रचनाएँ भी इसमें शामिल हैं। यहाँ के राव तथा चारण कवियों ने विशेष शैली के ऐतिहासिक प्रबंध काव्यों का प्रणयन कर रासो काव्य परंपरा का सूत्रपात किया, जिनमें पृथ्वीराज रासो, खुमाण रासो, राणा रासो, रतन रासो कायम खाँ रासो आदि प्रमुख है। इनमें चौहान, राठौड़ एवं गहलोत वंश के इतिहास का वर्णन मिलता है। अचल दास खींचि री वचनिका, राव रतन री बेलि का भी उल्लेख किया जा सकता है। चारण गीतों में भी वीरता के ऐतिहासिक संदर्भ मिलते हैं। विशेष यह है कि यहाँ के कवि मात्र लेखनी में दक्ष नहीं थे, अपितु राष्ट्रीय स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मैदान में तलवार का जौहर दिखाकर शत्रु के दांत खट्टे करने में भी समर्थ थे। संस्कृत पंडित कवि और वीर रमणियाँ भी युद्ध भूमि में संलग्न होकर शत्रु को धूल चटाते दिखते हैं। राजस्थान के इन वीर ऐतिहासिक काव्य में से कुछ का विश्लेषण यहाँ पर करेंगे–

वीठू सूजा कृत राव जैतसी रो छंद

यह एक खंडकाव्य है। इसे प्रकाश में लाने का श्रेय इटालियन विद्वान पी. एल. टेस्सिीटरी को है। उन्हें संवत 1629 में अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर में एक हस्तलिखित प्रति प्राप्त हुई, जिसे आधार बनाकर उन्होंने ग्रंथ का संपादन किया। उसे उनकी मृत्युपरांत 1920 ई में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कोलकाता ने प्रकाशित किया। सूर्य कारण पारीक, मूलचंद गणेश और अमर सिंह राजवी ने भी इस ग्रंथ को अनूदित और संपादित किया है। वीठू सूजा का जन्म उदासर गाँव, तहसील सरदारशहर, चूरू में हुआ। उन्हें बीकानेर के राव जैत सिंह ने 12 गांव की ताजीम के साथ एक लाख पसाव प्रदान किए, जिनमें पाबूसर और खिलेरी गाँव उन्हें दिए गए। राव जैत सिंह का बाबर के पुत्र कामरान से युद्ध 1534 ईस्वीं में हुआ। इस युद्ध के एक वर्ष के पश्चात वीठू सूजा ने 'छंद राउ जइतसी रउ' नामक ग्रंथ लिखा, इसमें कुल 401 छंद हैं जिनमें 11 गाहा, 4 दोहा, 385 पाधड़ी छंद और एक कवित्त है। डिंगल के प्रसिद्ध वैण सगाई अलंकार का प्रयोग हुआ है, साथ ही उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा व सादृश्य मूलक अलंकार का प्रयोग प्रभावी रूप से हुआ है। यह ग्रंथ राठौड़ों के शौर्य को उजागर करता है। इसमें राव बीका से लेकर जैत सिंह के काल की घटनाओं का वर्णन है तथा मारवाड़ के शासक राव चूड़ा से राव जोधा तक की सामरिक उपलब्धियों का वर्णन है।

इसमें कामरान और जैतसी के मध्य युद्ध का वर्णन किया गया है–

ढ़ाकि दाणवि जइत सरूपदीव, नेठाहि धीरि पाखिय नित्रीठ।

हिंदुआ तुरक्का हुषिय हक्क, कारिमाक वाजि कक्किय कटक्कम।।

राव जैतसी ने कामरान को पराजित किया।

पद्मनाभ कृत कान्हड़दे प्रबंध

इस रचना के अन्य नाम है 'श्री राउल कान्हड पावडू रास' अथवा 'श्री कान्ह चरिय'। इसकी रचना जालौर राजवंश के अखेराज के संरक्षण में

स्वर्णागिरी दुर्ग में हुई। दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया और हिंदू पराजय होने लगी, ऐसे समय में पद्मनाभ ने निराश जनता की शंकाओं का समाधान अपनी कल्पना द्वारा प्रस्तुत किया है। वह भावी आशा जीवित रखने हेतु कर्म गति व पुनर्जन्म का सिद्धांत रचना में प्रस्तुत करता है और धर्म की ही विजय होगी ऐसा विश्वास दिलाते हैं।

"विषम कर्मगति किम टलई, हो मनि विषाद म अणि।

भगति मुगति दानेश्वर सुणीई, समरी न सारंगपाणि।।

वीर कवि व लेखक निराशाजनक स्थिति में आशा–विश्वास वीरता और जोश जागृत करने का कार्य

करते रहे हैं।

दलपत मिश्र कृत जसवंत उद्योत

कवि के अनुसार इसकी रचना विक्रम संवत 1704 या 1648 ईस्वीं में की गई थी। पोकरण विजय का वर्णन इस बात की पुष्टि करता है। ग्रंथ में महाराजा जसवंत सिंह के चरित्र को विषय वस्तु बनाया गया है इसी कारण यह ग्रंथ जोधपुर राज्य व राठौड़ों का इतिहास बन गया है। यह तीन भागों में विभाजित है– प्रथम राठौड़ वंश का संबंध देव श्रेणी से जोड़ने का प्रयास किया गया है। इसके लिए पौराणिक कथाएँ विष्णु पुराण से ली गई हैं। द्वितिय में तिथि विहीन लोक विश्वास पर आधारित इतिहास का वर्णन है। तृतीय में दस्तावेजों पर आधारित तथ्यात्मक इतिहास वर्णित किया गया है। इतिहासकारों के अनुसार तृतीय भाग ही प्रामाणिक है, क्योंकि यहाँ वर्णित तिथियों का घटनाओं की सत्यता अन्य दस्तावेजों से भी प्रमाणित होती है। राव जोधा का जन्म, जोधपुर की स्थापना, राव जोधा की मृत्यु, उनके पुत्र बीका द्वारा बीकानेर की स्थापना, अन्य दूदा द्वारा मेवाड़ बसाना, रावल सातल, राव सुजा एवं राव गांगा का जन्म एवं राज्यारोहण, व स्वर्गवास की सत्यता पुष्ट है। ग्रंथ की रचना का उद्देश्य महाराजा जसवंत सिंह की प्रशंसा करना रहा है, इसलिए कवि ने महाराणा का आलंकारिक वर्णन ऐतिहासिक वर्णन से अधिक किया है। लेखक ने सूचना राठौर खापों के उद्भव की दी है जो कि महत्वपूर्ण विशेषता है।

कवि जान कृत क्यामखाँ रासो

इस ऐतिहासिक ग्रंथ का नाम 'रासा श्री दीवान अलिफ खाँ है, जिसे विद्वानों ने 'क्यामखाँ रासो' नाम दिया है। इसमें 1045 पद्य हैं। अलिफ खाँ पर 373 पद्य, क्यामखाँ पर 186 पद्य हैं। । मुस्लिम आगमन से पूर्व मरूप्रदेश का हिसार, झुंझुनू और फतेहपुरवाटी का क्षेत्र बागड़ कहलाता था, इस क्षेत्र के शासक बागड़ी कहलाए। क्यामखानी के अधीन क्षेत्र छापर, बगड़, फतेहपुरवाटी और झुंझुनूवाटी नाम से प्रसिद्ध हुए। फतेह खाँ ने फतेहपुर, मुहम्मदखाँ ने झुंझा जाट के नाम पर झुंझुनू बसाया। जलालसर नवाब जलाल खान ने और 12 कोस का बीहड़, रखा जो समाप्त हो गया है। दौलत खाँ ने दौलताबाद, नाहर खाँ ने नाहरगढ़, फतेहखाँ फदनपुरा आदि बसाए। इस क्षेत्र पर क्यामखानियों ने 279 वर्षों तक शासन किया। क्यामखानियों की उत्पत्ति चौहानों या चहुवाणों से हुई है। यह जान कवि की निम्न पंक्तियों से सिद्ध होता है जिसमें चौहान को काल पुरुष कहा है–

कलप बिच चहुवान है, जाकै अनगन साख।

जो हो जानो जान कही, सु तो सुनाउ भाख।।

और यह उत्पत्ति धर्म परिवर्तन द्वारा थी ना कि जन्मजात। क्यामखानियों की यह पीड़ा इन पंक्तियों में वर्णित है–

करमचंद की वरनो बातां कैसे कीनो तुरक विधाता।

करमचंद ददरेवा के चौहान मोटेराव का ही पुत्र था, बादशाह ने धर्म परिवर्तन कर उसका नाम बदल दिया –

करमचंदेते फेरिके धरयो क्यामखाँ नाम।

रासो से यह भी स्पष्ट है कि मुसलमान व मुगल शासको ने क्यामखानियों को सदैव अपने नजदीक रखा।

जैन कवि मान कृत राजविलास

यह ग्रंथ जैन कविमान द्वारा लिखा गया है, जिसकी मूल प्रति प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर में सुरक्षित है। प्रथम संस्करण नागरी प्रचारिणी ग्रंथमाला में प्रकाशित हुआ। इसके संपादक लाला भगवानदीन थे। दूसरा संपादन आकर ग्रंथमाला, नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा 1958 में प्रकाशित हुआ, जिसका संपादन डॉ. मोतीलाल मेनारिया ने किया। ग्रंथ में महाराजा राज सिंह के शासन काल की 1652 से 1677 के मध्य घटनाओं का वर्णन है और इन घटनाओं की पुष्टि अमर काव्य, राज प्रशस्ति महाकाव्य आदि शिलालेखों द्वारा होती है। इस काव्य लगभग 20 विलासों में विभक्त है। प्रथम विलास में मेवाड़ व चित्तौड़ किले का वर्णन है। इसके पष्चात बप्पा रावल के जीवन की घटनाएँ हैं, दूसरे विलास में बप्पा रावल से जगत सिंह प्रथम तक की वंशावली चित्रित है, तीसरे विलास में महाराणा राज सिंह के विवाह का वर्णन, चौथे में सर्वऋतु विलास बगीचे, सातवें में महाराणा राज सिंह का चारूमति से विवह, आठवें विलास में राजसमुद्र निर्माण, नवें विलास में कभी मान ने जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह द्वारा दारा का पक्ष लेने, जमरूद में उनकी मृत्यु होने पर जोधपुर को खालसा करने, अजीत सिंह को दिल्ली बुलाने आदि का वर्णन है।

इस प्रकार यदि देखा जाए तो राजस्थान में ऐतिहासिक काव्य भरे पड़े हैं, जो कि विभिन्न जैन कवियों, रासो कवियों, चारण, भाट आदि द्वारा लिखे या गाये गए हैं। उपर्युक्त काव्य इस प्रकार के हैं जिनमें राजाओं की वीरता और युद्ध का वर्णन है। किस प्रकार से मुगलों से उनके युद्ध हुए और उसमें बहुत से शासकों ने वीरता का प्रदर्षन किया तथा अंतिम सांस तक लड़ते हुए मारे गए। ललनाओं, वीरांगनाओं ने जौहर किया। विभिन्न राजाओं की प्रशस्ति इसमें शामिल है। इन महाकाव्यों में राजाओं के जन्म से लेकर मृत्यु तक और उनके आगे के वंशज, वंशावलियों का वर्णन है, इसके द्वारा यह बताया गया है किस प्रकार राजस्थानी राजा अपने राज्य को बचाने के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए हैं, और किस प्रकार से उन्होंने मुगलों का विरोध करते हुए अपने राज्य को बचाए रखा। इस प्रकार यह काव्य ऐतिहासिक भी है और वीरता का भाव पैदा भी करते हैं। ये अप्रतिम हैं।

संदर्भ सूची

बंसल,जे. के. (1999) राजस्थान के एतिहासिक भाषा काव्य. जोधपुर. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान.

पारीक, सूर्यकरण, व रामसिंह(1831). बेलि कृष्ण रूक्मिणी री. उत्तर प्रदेष. हिंदुस्तानी अकादमी.

पारीक, सूर्यकरण, व रामसिंह (1997). कान्हड़ दे प्रबंध. जोधपुर. राजस्थान पुरातन ग्रंथामाला. राजसथान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान.